उत्तराखण्ड के टेरिडोफाइट्स पादप समुदाय की औषधीय गुणों वाली कुछ प्रजातियाँ

एन0 पुनेठा एवं ऋचा पुनेठा
वनस्पति विज्ञान विभाग, एल0 एस0 एम0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
पिथौरागढ़-262502(उत्तराखण्ड),भारत
punethan_bot@yahoo.co.uk

सार

चूंकि उत्तराखण्ड का अधिकतम भाग पर्वतीय है, इसलिए इस राज्य में शीतोष्ण एवं एल्पाइन जलवायु में पाई जाने वाली वनस्पतियों की बहुतायत है। इन्हीं वनस्पतियों में से लगभग 350 प्रजातियां टेरिडोफाइटा समुदाय की हैं जिनमें से 22 प्रजातियों का उपयोग विभिन्न बीमारियों में स्थानीय लोगों के द्वारा या जन जातियों द्वारा किया जाता रहा है। इस लेख में इन्हीं प्रजातियों के बारे में सूचना दी गई है।

Some medicinally useful Pteridophytes of Uttarakhand

N. Punetha and Richa Punetha
Department of Botany
L. S. M. Govt. P. G. College
Pithoragarh(U. K.)-26502, India
punethan_bot@yahoo.co.uk

Abstract

Nearly all the known ecological zones are found in the hill state of Uttarakhand, therefore, plants of subtropical to alpine climate are found here. About 350 species of Pteridophytes occur in different climatic regimes of the state. In this communication mention of 22 species of Pteridophytes is made which are often traditionally used in various ailments by the local people and various tribal groups.

हमारा सौभाग्य है कि हम जैव विविधता से परिपूर्ण पृथ्वी पर रहते हैं। अद्यतन लगभग 16 लाख जीवों की प्रजातियों का वर्णन आधुनिक जीव विज्ञान में मिलता है यद्यपि कुल 80 लाख से ऊपर जीवों की प्रजातियां इस पृथ्वी पर होने का अनुमान है। जीवों की लगभग 1.2 लाख प्रजातियां भारतवर्ष में होने का अनुमान है जो कुल ज्ञात प्रजातियों का 7.5% है जबकि भू–भाग के आधार पर भारत का क्षेत्रफल पृथ्वी के क्षेत्रफल का मात्र 2.2% ही है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि जैव विविधता की दृष्टि से भारत की दुनियां में अपनी अहम भूमिका है। इन्हीं कारणों से भारत को विश्व के 12 बड़े जैव विविधता (मेगा बायोडायवर्सिटी) वाले देशों में स्थान मिला है। जीवों की ज्ञात प्रजातियों में से लगभग 50% वनस्पतियां हैं जिन पर सम्पूर्ण जीव जन्तु निर्भर हैं। इन्हीं वनस्पतियों से जीव–जन्तुओं को भोजन, प्राणदायी वायु, आश्रय आदि मिलते हैं। अनेकानेक वनस्पतियों से औषधियां तैयार की जाती हैं। भारत वर्ष में टेरिडोफाइटा समुदाय की लगभग 1100 प्रजातियां पाई जाती है जिनमें से अधिकतर हिमालयी क्षेत्र में हैं। इनकी विविधता दक्षिण भारत के पश्चिमी घाट में भी देखने योग्य है। इस समूह के अंतर्गत फर्न तथा लाइकोफाइटा प्रजाति के पौधों को रखा गया है। इसी समूह के पूर्वजों की उत्पत्ति पृथ्वी की सतह पर कुछ स्थानों में आज से लगभग 65 करोड़ वर्ष पूर्व हुई थी। तब से अबतक के इस लम्बे एवं जटिल जैविक विकास में आधुनिक फर्न प्रजातियों की उत्पत्ति तो हुई ही, इन्हीं से अन्य पादप वर्गों की उत्पत्ति भी मानी जाती है। इस समुदाय की अधिकतर प्रजातियां जंगलों में छायादार, नमी वाले स्थानों पर पाई जाती हैं। कुछ ट्री फर्न्स को छोड़कर अधिकतर प्रजातियों की पत्तियों की ऊंचाई 1–1.5 मीटर तक होती है, इनमें तना सामान्यतया भूमिगत या सतह पर होता है। केवल कुछ प्रजातियों को छोड़कर इस प्रजाति के पौधों का उपयोग मानव हित में नगण्य ही रहा है। *डिप्लेज़ियम मैक्ज़िमम, डिप्लेज़ियम एस्कुलेंटम, मैटु िया स्टुथियोप्टेरिस* आदि प्रजातियां ऐसी हैं जिनकी कोमल पत्तियां सब्जी में प्रयोग में लाई जाती हैं। कुछ प्रजातियों को भारतवर्ष के विभिन्न भागों में रहने वाली जन–जातियों के द्वारा विभिन्न बीमारियों में औषधियों के रूप में प्रयोग किया जाता है। विगत कुछ वर्षों में कतिपय प्रजातियों के रासायनिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इन पौधों में भी औषधीय तत्व विद्यमान हैं तथा इनसे अब विभिन्न प्रकार की औषधियां तैयार की जा रही हैं।

टैरिडोफाइटा की लगभग 350 प्रजातियां उत्तराखण्ड की विविध जलवायु में (ऊष्मा कटिबंधीय, सम–शीतोष्ण, शीतोष्ण तथा एल्पाइन जलवायु वाले क्षेत्रों में) बहुतायत से पाई जाती हैं। कुछ स्थानों पर तो इनकी संख्या अन्य वनस्पतियों से कहीं अधिक है। इसी प्रकार की कुछ प्रजातियों का उल्लेख निम्नवत है जिनका उपयोग उत्तराखण्ड की जन–जातियों एवं अन्य लोगों द्वारा कुछ बीमारियों में किया जाता है। पाठकों की जानकारी के लिए कुछ ऐसी प्रजातियों का उल्लेख भी किया गया है जो अन्य देशों के साथ ही साथ उत्तराखण्ड में भी पाई जाती हैं लेकिन इनका औषधीय उपयोग अन्य देशों में तो किया जाता है लेकिन उत्तराखण्ड में नहीं किया जा रहा है

तालिका– 1 उत्तराखण्ड राज्य में पाई जाने वाली टेरिडोफाइटा समूह की कुछ प्रजातियों के औषधीय गुण

क्र. सं0	प्रजाति	परंपरागत उपयोग
1.	*एडिएंटम कैपिलस वेनेरिस*	खाँसी, गले के रोगों में, कुछ प्रकार के चर्म रोगों में भी
2.	*एडिएंटम इन्सिज़म*	पेट के जलन में, ज्वर से राहत मिलती है
3.	*एडिएंटम फिलिपैंसे*	गर्भनिरोधक औषधि
4.	*एडिएंटम वैनुस्टम*	ज्वर कम करने के लिए, जनरल टॉनिक
5.	*काइलैन्थीज फैरिनोसा*	त्वचा की सूजन में
6.	*एस्प्लीनियम इन्डिकम*	पेशाब के साथ रक्त स्राव रोकने के लिए
7.	*एस्प्लीनियम लैसिनियाटम*	ल्यूकोरिया में
8.	*एस्प्लीनियम निडस*	पीलिया रोग में, मलेरिया में
9.	*ब्लैकनम ओरिएन्टेल*	जनरल टॉनिक के रूप में
10.	*डाइ ेनोपटैरिस लीनियैरिस*	कब्ज में, पेट के कीड़ो को मारने के लिए
11.	*हैलमिथोस्टैकिस जेलैनिका*	सियाटिका दर्द में
12.	*स्फैनोमेरिस चाईनेनसिस*	मूत्र विसर्जन में सहायक, आँत्र ज्वर में
13.	*लाइकोपोडाईला सरनुआ*	चर्म रोग में
14.	*लाइगोडियम फ्लैक्सुओसम*	पित्ताशय की पथरी के ईलाज में
15.	*लाइगोडियम जैपोनिकम*	मूत्र विसर्जन में सहायक
16.	*नै ेलेपिस कॉर्डिफोलिया*	घाव भरने में सहायक, आँतों के रोगों में सहायक
17.	*ओफियोग्लोसम रेटिकुलेटम*	घाव भरने में सहायक, जले हुए स्थान पर लगाने से आराम मिलता है।
18.	*पाइरोसिया एडनेसेन्स*	रयूमेटाइड आर्थराइटिस में उपयोगी
19.	*पाइरोसिया लेनसियोलेटा*	चर्म रोगों में
20.	*टेरिडियम रिवोल्यूटम*	दस्त में, पेट के कीड़ो को मारने में सहायक
21.	*टेरिस बाइऑरिटा*	विभिन्न प्रकार के क्रॉनिक रोगों में
22.	*सिलैजिनेला ब्रायोप्टेरिस*	जनरल टॉनिक, मूत्र विसर्जन में सहायक

संदर्भ

1. पुनेठा, एन0 तथा खोलिया, बी0 एस0(2010) फ्लोरिस्टिक डायवर्सिटी ऑफ फर्नस् एण्ड फर्न एलाइज इन उत्तराखण्ड, अध्याय– पुस्तक; पी0 एल0 उनियाल; बी0 पी0 चमोला एवं डी0 पी0 सेमवाल– द प्लांट वैल्थ ऑफ उत्तराखण्ड, जगदम्बा पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, मु0 पृ0 293–304।
2. धीमन, ऐ0 के0(1998) ईथनोमैडिसिनल यूजेज ऑफ सम टेरियोफाइटिक स्पेसीज इन इंडिया, इंडियन फर्न जर्नल, खण्ड 15, मु0 पृ0 61–64।
3. उप्रेती, के0; जलाल, जे0 एस0; तिवारी, एल0 एम0; जोशी, जी0 सी0 तथा पांगती, वाई0 पी0 एस0(2009) ईथनोमैडिसिनिल यूजेज ऑफ टेरियोफाइटस ऑफ कुमाऊँ हिमालय, उत्तराखण्ड, भारत, जर्नल ऑफ अमेरिकन साइंसेज, खण्ड 5, मु0 पृ0 167–170।